मण्डोर का बाउक - अभिलेख (837 ई०)

मण्डोर का यह अभिलेख मण्डोर के किसी विष्णु मंदिर में लगा था मण्डोर के नष्ट होने पर वह पत्थर के रूप में जोधपुर नगर के शहरपनाह में कभी लगा दिया गया वहाँ से उसे प्राप्त किया गया। ये लेख मण्डोर के प्रतिहारों की वंश परम्परा जानने के लिए बड़ा उपयोगी है। इसका समय वि० सं० 894 चैत्र शुक्ला 5 है। इस लेख को तथा दूसरे दो घटियाले के लेखों को पढ़ने से प्रतिहारों के सम्बन्ध में कई नई जानकारियाँ हमें मिलती हैं यह प्रशस्ति बाउक ने खुदवाई थी इसकी भाषा संस्कृत है

इस अभिलेख का लेखक ~~[illegible]~~ सुनार विष्णु-रावी का पुत्र कृष्णेश्वर है। इस अभिलेख में 22 पंक्तियाँ हैं।

"प्रो० डी० आर० भण्डारकर ने सर्वप्रथम इस अभिलेख को पढ़ा। तथा प्रो० डी० आर० भण्डारकर ने इसकी तिथि वि० सं० 894 पढ़ी है।"

मण्डोर का बाउक - अभिलेख राजनीतिक सामाजिक, धार्मिक, स्थापत्य, साहित्यिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

राजनीतिक महत्व :- (मण्डोर का बाउक अभिलेख राजनीतिक दृष्टि से अत्यधिक ~~महत्वपूर्ण है~~ महत्वपूर्ण है। ~~अभिलेख की~~ मण्डोर के प्रतिहारों का इतिहास

Page No.
Date / /

बाउक के जोधपुर अभिलेख और कक्कुक के घटियाला अभिलेख पर आधारित है। बाउक और कक्कुक दोनो सौतेले भाई थे। और दोनो ने क्रमशः शासन किया - पहले बाउक ने और फिर कक्कुक ने।)

जोधपुर अभिलेख से ज्ञात होता है---

स्व भ्राता रामभद्रस्य प्रतिहारयं कृत यतः।
श्री प्रतिहार - वंशीय - अतश्चोन्नतिम आन्पुयाता ॥1॥
विप्र श्री हरिश्चन्द्रस्य पत्नी भद्रा च क्षत्रिया।
ताभ्यां तु ये सुता जाता प्रतिहारंश्चा तान बिन्दु ॥2॥

रामभद्र (रामचन्द्र) के अनुज (लक्ष्मण) ने ही प्रतिहार का कार्य किया था इसीलिए यह वंश प्रतिहार नाम से विख्यात हुआ। यही तथ्य कक्कुक के घटियाला अभिलेख में भी दोहराया गया है। उपर्युक्त दोनो अभिलेखो में प्रतिहार वंश के आद्य पुरुष हरिश्चन्द्र को विप्र कहा गया है। क्षत्रिय राजा हरिश्चन्द्र के लिए विप्र शब्द का उपयोग उल्लेखनीय है।

मण्डोर के बाउक - अभिलेख की 5, 7, 9, 11 से 19 तथा 23 वी पंक्ति में प्रतिहारो की वंशावली का वर्णन है - जो कि इस प्रकार है ----

प्रतिहार वंश

हरिश्चन्द्र

- ब्राह्मणी से प्रतिहार ब्राह्मण
  - भोगभट्ट
  - कक्क
- क्षत्रिय रानी भद्रा से
  - रज्जिल → नरभट्ट (पीलपेली) → नागभट्ट
    - तात → यशोवर्धन → चन्दुक → शीलुक → झोट → भिल्लादित्य → कक्क
      - दुर्लभ-देवी से कक्कुक — घटियाला अभिलेख
      - पद्मिनी भट्टाणी से बाउक — जोधपुर अभिलेख
    - भोज
  - दद्द

Scanned by CamScanner

प्रतिहारों की वंशावली तथा उपलब्धियाँ :-

अभिलेख की 12 वी पंक्ति में उल्लेख आता है कि नरभट्ट का उत्तराधिकारी नागभट्ट था जिसने मेदांतक अथवा वर्तमान मेड़ता को अपनी राजधानी बनाया। 18 व 19 वी पंक्ति में उल्लेख आता है कि चण्डुक के उत्तराधिकारी शिलुक ने भट्टी देवराज को परास्त कर त्रवनी तथा वल्ल को विजित किया इस कारण उसे 'वल्ल-मण्डल-पालक' की उपाधि प्रदान की गई है।

अभिलेख की 5 वी व 7 वी पंक्ति में हरिश्चन्द्र की दो रानियों का उल्लेख है जिनमें पहली ब्राह्मणी रानी तथा दूसरी भद्रा की जानकारी मिलती है। अभिलेख की 8 वी पंक्ति में उल्लेख आता है कि हरिश्चन्द्र की ब्राह्मणी रानी से उत्पन्न संतान ब्राह्मण प्रतिहार कहलाए तथा भद्रा रानी से उत्पन्न संतान मद्यपान करने वाले प्रतिहार कहलाए। अभिलेख की 9 वीं पंक्ति में राजा हरिश्चन्द्र के चार सन्तानों का उल्लेख मिलता है— भोगभट्ट, कक्क, रज्जिल दद्द!

रज्जिल का पुत्र नरभट्ट हुआ अत्यधिक वीर होने के कारण उसे पेलापेली के नाम से भी जाना जाता है। जिसका वर्णन अभिलेख की 11 वी पंक्ति में मिलता है।

13 वी पंक्ति में नागभट्ट की पत्नी जज्जिका देवी से उत्पन्न दो पुत्र तात और भोज का वर्णन है। तथा 15 से 20 वी पंक्ति तक अन्य प्रतिहार शासकों जैसे यशोवर्धन चन्दुक, शीलुक, झोट, भिल्लादित्य, कक्क आदि की जानकारी मिलती है।

अभिलेख की 20 वी पंक्ति में कक्क और उसकी पत्नी पद्मिनी भट्टाणी से उत्पन्न पुत्र बाउक

Scanned by CamScanner

का वर्णन है।
मण्डोर के बाउक-अभिलेख की 21वीं पंक्ति में लिखा है कि जब नंदावल्ल को मारकर शत्रु सेना आगे बढ़ आई और स्वजनों ने साथ छोड़ दिया तब राणा बाउक ने घोड़े से उतरकर तलवार द्वारा अपने शत्रु राजा मयूर को मार गिराया। इस प्रकार राजनीतिक इतिहास की दृष्टि से मण्डोर का बाउक-अभिलेख अत्यंत महत्वपूर्ण है।

② सामाजिक महत्व :- जोधपुर शिलालेख से तत्कालिन समाज की स्थिति, समाज में प्रचलित परम्पराएं व अन्य व्यवस्थाओं पर भी प्रकाश पड़ता है। तथा इससे प्रतिहार वंश की सामाजिक-व्यवस्था की जानकारी मिलती है।

बहुपत्नी प्रथा प्राचीन काल से ही राजपरिवारों, धनी, वैश्यों तथा उच्च वर्गों में विशेषतया प्रचलित थी हमारे अध्ययनकाल के अभिलेखों से यह ज्ञात होता है कि राजपरिवारों में बहुपत्नी प्रथा का प्रचलन था सामंत वर्ग व धनी वर्ग भी इस विषय में राजपरिवारों का अनुकरण करते थे। प्रतिहार-बाउक के जोधपुर अभिलेख से ज्ञात होता है कि उनके वंश के आदि पुरुष हरिश्चन्द्र ने ब्राह्मण व क्षत्रिय जाति में विवाह किया

था। जिससे यह ज्ञात होता है कि इस समय समाज में अर्न्तजातीय विवाह का प्रचलन था। अभिलेख की 26वीं पंक्ति में उल्लेख आता है कि प्रतिहार वंश के अंतिम शासक कक्क ने भी दो विवाह किए। उसकी पहली पत्नी दुर्लभदेवी थी ~~व उसकी दूसरी पत्नी भाटी रानी पद्मिनी थी~~ ~~जिसके~~ जो जिसके वंश के बारे में कोई जानकारी नहीं मिलती है व उसकी दूसरी रानी भाटी वंश की पद्मिनी थी जिससे यह ज्ञात होता है की इस समय समाज में अर्न्तजातीय विवाह के साथ-2 ~~अर्न्तजातीय~~ अर्न्तशाखीय विवाह का प्रचलन था।

धार्मिक महत्व :- मण्डोर का बाउक - अभिलेख धार्मिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। अभिलेख की 1 व 2 पंक्ति में विष्णु की स्तुति की गई है। अभिलेख में अंकित है 'ओम नमो वासुदेवाय' जिससे यह ज्ञात होता है कि आठवीं शताब्दी तक कृष्णावतार की कल्पना पक्की हो गई थी जोधपुर अभिलेख से हमें समाज में प्रचलित अन्य धार्मि

Scanned by CamScanner

1st Choice

Page No.
Date / /

क्रियाओं की जानकारी प्राप्त होती है जिनमें कुछ धार्मिक क्रियाएँ ऐसी थीं जिनके बारे में कुछ असंगत न होगा उदाहरण के लिए राजशेखर ने बालरामायण में प्रयाग में आत्महत्या करने का उल्लेख किया है। इसी प्रकार चीनी यात्री ह्वेनसांग ने प्रयाग के अक्षयवट से कूदकर आत्महत्या करने का वर्णन किया है। अल-बिरूनी के कथन से भी ऐसा ही संकेत मिलता है। जल-समाधि के अतिरिक्त अग्नि में जल जाना भी मोक्ष-दायक माना जाता था। कन्नौज के प्रतिहार शासकों में से किसी ने भी इस परम्परा का पालन नहीं किया किन्तु मण्डोर के प्रतिहार-शासक कक्क ने अवश्य गंगा में जल-समाधि ले ली और उसके पुत्र भिल्लादित्य ने उपवास करते हुए प्राण-त्याग दिए।

साहित्यिक महत्व :- साहित्यिक दृष्टि से भी मण्डोर का बाउक अभिलेख अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

अभिलेख की 6 पंक्ति में उल्लेख आता है कि विप्र-हरिचंद्र वेदशास्त्र में पारगंत और प्रतिहार वंश का गुरु-अर्थात् पूर्वज था। श्री० ए० के० व्यास का कथन है कि

Scanned by CamScanner

विप्र शब्द क्षत्रिय राजाओं के लिए गृहपति अर्थ में प्रयोग किया गया है। यहाँ भी विप्र हरिचंद्र को वेद और शास्त्र में निष्णात बताकर उसे प्रतिहार वंश का गुरु अर्थात् पूर्वज कहा गया है और प्रजापति (ब्रह्मा) से उसकी उपमा दी गई है।

प्रतिहारों के अनेक शासकों की साहित्य में अत्यधिक रुचि थी उनके समय अनेक विद्वानों को संरक्षण प्राप्त था प्रथम प्रतिहार सम्राट नागभट्ट क्षमाश्रमण का आश्रयदाता बताया गया है क्षमाश्रमण जैन साहित्य में पारंगत था तथा जैन विद्वान बप्पभट्टि नागभट्ट II का मित्र तथा गुरु था जिसने नागभट्ट II के समय अनेक ग्रंथों की रचना की परंतु उसके ग्रंथ अब उपलब्ध नहीं है। भोज प्रथम के दरबार में भट्टधनेक का पुत्र बालादित्य रहता था जो कि ग्वालियर प्रशस्ति का लेखक था।

M

अभिलेख की 25 वीं पंक्ति में उल्लेख आता है कि मण्डोर का शासक कक्क – छन्द तर्क, व्याकरण, ज्योतिष आदि का ज्ञाता था। तथा

B

K

1st Choice

वह सभी भाषाओ की कविता मे भी निवात था। जोधपुर अभिलेख मे मण्डोर के बाउक की बड़ा विद्वान बताया गया है।

प्रतिहार युग में संस्कृत प्राकृत तथा अपभ्रंश तीनों भाषाओं में साहित्य की रचना हुई किंतु प्राकृत का चलन दिनों-दिन कम हो रहा था तथा अपभ्रंश ने उसका स्थान ले लिया था

उपर्युक्त वर्णन से विदित होता है कि प्रतिहार युग में साहित्य कला तथा अनेक भाषाओं की उन्नति हुई।

भौगोलिक महत्व:- भौगोलिक दृष्टि से भी जोधपुर अभिलेख अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस अभिलेख में माडव्यपुर व मेदान्तक व साथ ही 11 वी पंक्ति मे गावणी, वल्लदेश आदि का नामोल्लेख हुआ है जिनका उल्लेख अन्य समकालीन अभिलेख प्रतिहारो के घटियाला के अभिलेख मे भी हुआ है। अनेक तीर्थ स्थलो के नामोल्लेख हुआ है जैसे - हरिद्वार, गंगा तीर्थ।

Scanned by CamScanner

खान-पान :- कक्कुक की जोधपुर प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि आठवीं सदी में क्षत्रिय सुरापान करते थे। घटियाला अभिलेख के अनुसार गुर्जर प्रतिहार शासक - हरिचंद्र की क्षत्रिय वंशीय रानी की संतति मद्यपायी (मद्यपान करने वाले) अर्थात क्षत्रिय कहलाये। इसका उल्लेख अभिलेख की 8 वीं पंक्ति में (drinkers of wine) आता है।

स्थापत्य कला :- अभिलेख में उल्लेख आता है कि हरिचन्द्र के पुत्रों - भोगभट्ट, कक्क, रज्जिल व दद्द ने माण्डव्यपुर (मण्डोर) का दुर्ग जीतकर उसकी प्राचीरों को ऊँचा किया। जोधपुर - अभिलेख की 20 वीं पंक्ति में उल्लेख आता है कि सिलुक धार्मिक प्रवृति का व्यक्ति था। त्रेता नामक स्थान पर उसने एक जलाशय तथा सिद्धेश्वर महादेव के मंदिर का निर्माण करवाया। तथा मण्डोर शाखा के कक्कुक (861 ई.) ने रोहिंसकूप में एक जैन मंदिर का निर्माण करवाया।

1st Choice

Page No.
Date 12 / /

सैनिक महत्व :- अभिलेख मे उल्लेख आता है
व्यक्तिगत
कि जब नदोवटल को मार-
कर शत्रु सेना आगे बढ आई
और स्वजनो ने साथ छोड दिया
तब सिंह के समान
मैदान में रहकर राणा
बाउक ने अपने घोडे से
उतरकर तलवार द्वारा अपने
शत्रु राजा मयूर को मार गिराया
तथा मैदान मे अनेक शत्रुओ
का विनाश किया।
बाउक अत्यंत उदार शासक
था यदि कोई शत्रु बाउक
के द्वार पर आता तो वह
उसका अतिथि की तरह आदर-
सत्कार करता परंतु यदि वही
शत्रु उसे युद्ध मैदान मे मिलता
तो वह उसका शत्रु की
तरह सामना करता।
बाउक विद्वान था - साहित्य मे
वीर व योद्धा था। (निपुण था)

Scanned by CamScanner